St. Peter's Senior Secondary School

(Affiliated to C.B.S.E. No. 2630043)

CLASS – 12 **(ASSIGNMENT– 4)**

SUBJECT - HINDI

DATE - 12 MAY,2020 (TUESDAY)

आलेख-लेखन

किसी एक विषय पर विचार-प्रधान एवं गद्य-प्रधान अभिव्यक्ति को 'आलेख' कहा जाता है। आलेख वस्तुत: एक प्रकार के लेख होते हैं जो अधिकतर सम्पादकीय पृष्ठ पर ही प्रकाशित होते हैं। इनका सम्पादकीय से कोई सम्बन्ध नहीं होता। ये लेख किसी भी क्षेत्र से सम्बन्धित हो सकते हैं; जैसे-खेल, समाज, राजनीति, अर्थ, फिल्म आदि। इनमें सूचनाओं का होना अनिवार्य है।

आलेख के मुख्य अंग

आलेख के मख्य अंग हैं- भूमिका, विषय का प्रतिपादन, तुलनात्मक चर्चा व निष्कर्ष।

सर्वप्रथम, शीर्षक के अनुकूल **भूमिका** लिखी जाती है। यह बहुत लम्बी न होकर संक्षेप में होनी चाहिए। **विषय के प्रतिपादन** में विषय का वर्गीकरण, आकार,रूप व क्षेत्र आते हैं। इसमें विषय का क्रमिक विकास किया जाता है। विषय में तारतम्यता व क्रमबद्धता अवश्य होनी चाहिए। **तुलनात्मक चर्चा** में विषयवस्तु का तुलनात्मक विश्लेषण किया जाता है और अन्त में विषय का **निष्कर्ष** प्रस्तुत किया जाता है।

आलेख रचना के सम्बन्ध में प्रमुख बातें :-

(1) लेख लिखने से पूर्व विषय का चिन्तन-मनन करके विषयवस्तु का विश्लेषण करना चाहिए।

(2) विषयवस्तु से सम्बन्धित आँकड़ों व उदाहरणों का उपयुक्त संग्रह करना चाहिए।

(3) लेख में श्रृंखलाबद्धता होना आवश्यक है।

(4) लेख की भाषा सरल, बोधगम्य व रोचक होनी चाहिए। वाक्य बहुत बड़े नहीं होने चाहिए। एक परिच्छेद में एक ही भाव व्यक्त करना चाहिए।

(5) लेख की प्रस्तावना व समापन में रोचकता होना जरूरी है।

(6) विरोधाभास, दोहरापन, असन्तुलन, तथ्यों की असंदिग्धता आदि से बचना चाहिए।

आलेख का उदाहरण (किसान का संघर्ष)

किसान का जीवन संघर्षपूर्ण है। उसका व्यवसाय ही संघर्ष है। वह खेती के लिए जितनी मेहनत करता है उतना उसे धन प्राप्त नहीं होता। उसे प्रकति भी धोखा देने से बाज नहीं आती। पहले तो बरसात न होने के कारण खेती बरबाद हो जाती है और कहीं फसल कृत्रिम जल व्यवस्था से तैयार भी कर ली तो उसे प्राकृतिक आपदा खत्म कर देती है। ऐसा कई बार होता है, कि किसान अपनी लहलहाती फसल देखकर फूला नहीं समाता और कुछ देर बाद ही अचानक बाढ़ आ गई। उसकी लहलहाती हँसती-खेलती खेती कीचड़ हो गई या भीषण तूफान आया और उसकी फसल कुचलता हुआ निकल गया। उसकी वर्ष भर की मेहनत मिट्टी में मिल जाती है। खेती ही तो उसके जीवन का आधार है। उसी से वह अपनी रोटी कमाता है, बच्चों की दैनिक जरूरतें पूरी करता है और उससे ही अपने सामाजिक खर्च पूरे करता है। जब खेती बरबाद हो जाती है तब उसकी ये सारी समस्याएँ ज्यों-का-त्यों खड़ी रहती हैं। अगर किसान की फसल बच गई तो उसे बाजार तक पहुँचाने के लिए संघर्ष करना पड़ता है। बाजार में बिक गई तो उसका धन प्राप्त करने के लिए सेठ-साहूकारों के दर पर एड़ियाँ रगड़नी पड़ती हैं। जो पैसा फसल बेचकर घर में आता है वह उनसे अपनी दैनिक जरूरतें पूरी करने की सोच ही रहा होता है कि सेठ-साहूकार और दूसरे लोग उसके दर पर कर्ज वसूल करने के लिए चल पड़ते हैं जो बचता है वह कर्ज उतारने में लगा देता है | सेठ साहूकारों से उधार लेकर अपना फिर व्यवसायी जीवन शुरू करता है और फिर संघर्ष करता है। जैसा संघर्ष उसके जीवन की जन्म कुंडली में लिखा है उससे निजात जीवन भर मिलने वाली नहीं।

WORKSHEET

“आँखों देखी दुर्घटना” विषय पर आलेख लिखिए |